equal to the realisation we get from Self-inquiry. When the mind rests continuously upon the Consciousness, higher goals become visible, and our actions and results turn out to be good.

In the present times, this quality of self enquiry i.e. Vichar has got eclipsed with the excessive use of social media platforms. Even bhagti means plugging to some social media platforms to listen to bhajans or sermons of some Baba. No doubt, these give momentary happiness but not the permanent bliss. For he permanent bliss, Vichar and dhyan are inevitable.

Most of us, receive messages on ethics, moral values and good conduct almost everyday, on Social media platforms like Whats-app. The more we are connected the more the messages we get. Looking at the frequency and the quantum of such messages, there is a reason to believe that these have their impact on the readers and they should turn into better humans but somehow it is not happening as my self analysis and inquiry revealed to me.

Does it mean that these messages are not serving any purpose? I won't say that these are not doing any good but we need to understand that these are only the seeds which we need to grow to get the desired which involves Vichar and action because when these seeds sprout, grow, become a tree or a shrub only then these bear fruit which we want to have. These call for lot of self enquiry, vichar, labour, dedication, spirit of service and love to have fruit at the right time. Most importantly one ought to have a lot of patience, forbearance and capacity to face pains and absorb unanticipated problems.

All noble souls who reached God did contemplation, meditation, self analysis, self inquiry and, underwent self cleansing and self mortification by putting many restraints on them and led a life of austerities and self discipline which not every body can do. Sage Patanjali's stress on following Yama, Niyama, Asana, Pranayama, Pratyahara, Dharana, Dhyana which only can lead to Samadhi corrobotaes this. Always remember---No pain, no gain."

Bhartendu Sood

*When we strive to become better than we are, everything around us becomes better too.
*One day, you will wake up and there won't be any more time to do the things you've always wanted to do. Do it now.
*If you want to be successful, you must respect one rule: never lie to yourself
*The secret of life is to fall seven times and get up eight times
*There is no fear except the fear of failure
*Always have a dream and work to relize it

सत्संग

तुलसीदास जी कहते हैं सत्संग के बिना विवके नहीं होता और प्रभुकृपा के बिना सत्संग की प्राप्ती नहीं होती। सत्संग कल्याण का मूल है।

सत्संग के प्रभाव से दुष्ट व्यक्ति भी सुधर जाते है जैसे परसमणि के स्पर्शमात्र से लोहा भी सोना हो जाता है। सत्संग के प्रभाव से कौआ हंस व हंस परम हंस बन जाता है। यदि दुर्भागयवश सज्जन कुसंग में पड़ जसए तो वह बहां भी सांप की मणि के सामान अपने गुणों का ही प्रकाश करते है।

सत्संग चार प्रकार से होता है। पहला सत्संग प्रभु से है जो की सर्वश्रेष्ठ है। दूसरे प्रकार का सत्संग संत महात्माओं की संगती से होता है। जीसरा सत्संग प्रभु भक्तों की संगती से होता है व चौथा सत्संग स्वाध्याय द्वारा होता है।

कन्या की आवश्यकता

32 वर्षीय तलाकशुदा No issue or liability matter settled हिन्दु, सुंदरव्यक्तित्व, शाकाहारी, कोई व्यसन नहीं graduate मासिक आये 30000 युवक के लिए कन्या कि आवश्यकता है। जाती बंधन नहीं। संपन व धर्मिक परिवार है। सम्पर्क करें।

9357831457, 9805232572

शिमला का SHARDA

कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए एक असरदार व अदभुत आयुर्वैदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले। फोन : 9465680686 9217970381

Marketing Off [illegible] Sector 45-A, Chandigarh [illegible]

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे। या Google Pay No. 9465680686 या Paytm No. 9465680686

अध्यात्मिक चमक भी उतनी ही आवश्यक है जितनी कि भौतिक चमक

नीला सूद

अक्सर देखने में आया है कि जब हम किसी नोकरी के लिये अर्जी भेजते हैं तो उस में अपने बारे में सब कुछ अच्छे से अच्छा बताने की कोशिश करते हैं यही नहीं अपनी कमियों को या असफलताओं को जहां तक हो सके छुपाने की कोशिश करतें है। होता यह है कि जो भी हमारी अर्जी को पढ़ता है, अगर हमें जानता न हो तो काफी उंची राय बना लेता है और या तो हमें नोकरी दे देता है या फिर कम से कम साक्षात्कार इन्टरवयू का मौका तो दे ही देता है। और जब इन्टरवयू का मौका आता है तो अपने आप को बहुत चमका कर पेश करते हैं ताकी हमारे अच्छी बातें ही इन्टरवयू ;लेने वाले को नजर आयें।

यही सब कुछ बैंक से कर्जा लेते समय होता है। हम बैंक के आगे सब कुछ ऐसा पेश करते हैं कि बैंक को लगता है कि उनका पैसा कहीं जाने वाला नहीं। बहुत बेखूबी अपनी कमियों को छुपा लेतें है। और आज तो हाल यह है कि ऐसी ऐजेंसियां बनी हैं जिनको आपकी अर्जी को चमका कर पेश करने में मुहारित है और उस के वे पैसे भी लेते है।

अब बात ले लिजिये महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलने की या फिर कहीं दोस्ती या रिश्ते का हाथ बढ़ाने की । कोशिश यही होती है कि अपने आप को चमका कर पेश करें ताकी हमारा प्रभाव अच्छा पढ़े।

इस लिये क्यों न हम अपने आप को अध्यात्मिक रूप में वैसे ही चमकायें जैसे कि संसारिक बातों के लिये चमकाते है। पर इस में एक बात जो समझनी होगी वह है कि संसारिक बातों के लिये स्वयं को चमकाते हुये जिस प्रकार कई बार हम झूठ का और दिखावे का सहारा लेते हैं वह अध्यात्मिक चमक के मामले में नहीं चल सकता कारण अश्यात्म का सम्बन्ध तो सीधा ईश्वर से है और ईश्वर तो सर्वज्ञ है, अर्थात सब के बारे में सब कुछ जानने वाला है। यह अध्यात्मिक चमक झूठ और आडम्बर के बिना होनी चाहीये जो कि तभी सम्भव है जब हम धर्म के गुणों को और ईश्वरीय गुणों को धारण करें न कि दिखावा मात्र हो।

पर इस से भी पहले कुछ व्यक्तियों के दिल में यह प्रश्न हो सकता है कि ईश्वर को साथ जुड़ने के लिये हमें अपने आप को अध्यात्मिक रूप से चमकानें की क्या आवश्यकता है? नोकरी वाला नोकरी देता है, बैंक वाला कर्जा देता है, बड़ा अफसर ओहदे में तरक्की दे सकता है, अच्छी तरह पेश होंगे तो नवयुवक को अच्छी लड़की जीवन साथी के रूप में मिल सकती है और ऐसे ही श्शादी योग्य लड़की को अच्छा लड़का मिल सकता है। ईश्वर से क्या मिलेगा ? तो इसका उत्तर यह है कि बाकी सब तो देंगें और वही देंगे जिसको देने के लिये ईश्वर ने उन्हें साधन बनाया है। पर ईश्वर ने तो पहले से ही बहुत कुछ दिया है। यह वायु, जल, अग्नि, सूर्य, फल–फूल व वनस्पति जिनके बिना जीवन सम्भव नहीं हैं, ईश्वर की कृपा का फल ही तो है। दूसरा जिस पर ईश्वर की कृपा है, सनिध्य है, उसका जीवन का रास्ता सदैव आसान रहता है, वह काटों में भी फूलों की सेज महसूस करता है। उसे कभी यह नहीं लगता कि वह अकेला है, उसे यह लगता है कि एक बहुत वड़ी शक्ति उसके साथ है जो कि उसे गलत रास्ते पर नहीं जाने देगी, जो कि अच्छा जीवन जीने के लिये बहुत वड़ा बरदान है। इसलिए जब ईश्वर से जुड़ गए तो हम जो दूसरी

चीजें चाहते हैं वे न केवल प्राप्त ही होगी परन्तु ईश्वर हमें वही देगा जिस में हमारा हित है। जब हम ईश्वर को सब कुछ मानने लगते है तो ईश्वर हमें अच्छे लोगों की संगत ही देता है।

क्या फर्क है अध्यात्मिक चमक में और भौतिक चमक में?

जब हम अपने आप को भौतिक रूप से चमकाने में लगे रहते हैं तो भौतिक पदार्थो को पाने की प्यास और बढ़ती है जो कि बेचैनी को और मानसिक तनाव को जन्म देती है। पहले व्यक्ति मकान पाना चाहता है , फिर शानदार बंगले की इच्छा करता है , फिर फार्म हाउस की और फिर चाहता है एक नहीं उसके कई शानदार फलैट बंगले हों। तृष्णा और लोभ उसके साथी बन जाते है। और जब उसकी ईच्छाऐ उस रफतार से पूरी नहीं होती जिनकी वह अपेक्षा करता है तो वेचैनी और तनाव पैदा होता है। यह ऐसी चमक है जो कुछ देर में कम होने लगती है।

इसके विपरीत जब व्यक्ति अपने में अध्यात्मिक चमक लाता है तो उस में सन्तोष, सहनशीलता व अपरिग्रह जैसे गुण आने लगते है। उसे लगता है कि जो भी मेंरे पास है वह बहुत है, जैसे मेरी आवश्यकता बढ़ेगी वह ईश्वर खुद साधन बना देगा। ईश्वर सम्पर्ण, उस ईश्वर में पूर्ण विश्वास, उसके जीवन का अंग बन जाते है। उस में यह सोच आ जाती है कि इस संसार की सब सम्पदा उस ईश्वर की है और यह मेरे लिये ही नहीं सब के लिये है। इसकी चमक या नशा कभी कम नहीं होता। दूसरा जो भी मेरे पास है वह मेरा नहीं ईश्वर का है जो कि ईश्वर ने मुझे प्रयोग के लिए व त्यागपूर्ण ढंग से भोगने के लिए दिया है। मेरे बाद यह उसी के पास चला जाएगा।

आखरी पहलू है कि हम यह अध्यात्मिक चमक कैसे लायें?

आखरी पहलू यह है कि हम अध्यात्मिक तौर पर अपने आप को कैसे चमकाये ताकी ईश्वर हमें पसन्द करें, अपने भक्तों की श्रेणी में रखे और हम पर कृपालु हो।

;1एक निराकार और अजन्मा ईश्वर को मानकर उस में पूर्ण विश्वास पहला कदम है। उसक बाद आती है ईश्वर की भक्ति, स्तुती और उपासना। ईश्वर भक्ति सिर्फ जाप नहीं बल्कि इश्वरिय गुणों को धारण करने की लगातार कोशिश करना है। यह ईश्वरीय गुण है——दूसरे प्राणियों पर दया और करूणा और सेवा की भावना, संवेदनशीलता अर्थात में दूसरों से वैसा ही व्यवहार करूं जैसा खुद से चाहता हूं। अगर मैं चाहता हूं कि कोइ भी वयक्ति मुझे मार कर अपना भोजन न बनाये तो मेरा भी कर्तव्य है कि मैं भी दूसरों को अपने भोजन के लिये न मारूं। उदारचित होना, सत्य के मार्ग पर ही चलना और दूसरों के साथ न्यायपूर्ण और धर्मानुसार व्यवहार।

;2द्ध सत्संग अध्यात्मिक चमक लाने का सब से सुगम उपाय है। सत्संग के तीन उपाय हैं, अच्छे विचार वाले लोगों के साथ रहना और गलत लोगों की संगती से बचना, महात्मा और विद्वान लोगों के उपदेश प्रवचन सुनना और यदि यह सम्भव नही तो महान व्यक्तियों के जीवन को पढना। उदाहरण के लिये भगवान श्री रामचन्द्र, जो कि गुणों की खान थे, का जीवन रोज पढते रहें या सुनते रहें तो उनके गुण हमें प्रभावित करने लगेंगे और कुछ समय बाद हम यह कोशिश करेंगे कि हम में भी श्री रामचन्द, के गुण आ जायें। जब घरेलु सम्सयायें घेर लेती हैं तो अगर हम रामायण पढ़ते है तो हमारा ध्यान इस और जायेगा कि श्री रामचन्द्र का आचरण ऐसे समय में कैसा रहा। पहले रामायण की कथा बहुत सादे ढ़ंग से मन्दिरों में होती रहती थी व व श्रधालु वहां आधा एक घंटा वैठ कर कथा सुन कर आते थे। पर आज मन्दिर जाने का अर्थ दो मिन्ट के लिये हाजरी लगाना व फटा फट ईश्वर से कुछ मांगना रह गया है। भक्ति तो भक्ति तभी है जब हम ईश्वरीय गुणों को उन महान व्यक्तियों के गुणों को धारण करें जिन्हें हम भगवान कहतें है। यही

तो अध्यात्मिक चमक है। यदि हम ईश्वरीय गुणों को उन महान व्यक्तियों के गुणों को धारण नहीं करते है और केवल पाठ करतें हैं तो वह सिर्फ वाचक भक्ति होगी जो कि अध्यात्मिक चमक नहीं ला सकती।

यह भी बहुत आवश्यक है कि हम सत्संग के साथ जो हमारे में कमियां हैं और बुराईयां हैं उनका भी अध्यन करें और उन बुराईयों को दूर करने पर त्वजों दें। इस के लिये तप औ।र अभ्यास की आवश्यकता है। यदि हम तप और अभ्यास करते हैं जो कोई ऐसी बात नहीं कि ईश्वर की हमारे पर कृपा न हो। हमारे सामने बहुत से महान व्यकितयों के नाम हें जैसे ऋषि बाल्मिकी और स्वामी श्रद्धानन्द जिन्हं सत्संग ने ही उनकी बुराईयों का अवलोकन करवाया और बाद में तप और अभ्यास से उन्होने उन बुराईयों पर काबू पा लिया।

3 कल्याण मार्ग का पथिक बनना

ईश्वर उन्हीं को प्यार करता है और आत्मा तभी उन्नत होती है जब हम दूसरों के कल्याण के लिये अपने सामर्थय के अनुसार कुछ करते हैं। कल्याण मार्ग का पथिक वने बिना अध्यात्मिक चमक नहीं आ सकती । कल्याण मार्ग के पथिक होने का अर्थ है जो समाज मे हम से कमजोर है उनकी सहायता करना जाकी वे भी मानविय अधिकारों से वंचित न रहें। शायद आपने यह कहानी पढ़ी या सुनी होगी।

एक भक्त थे, बड़े प्रेम से ईश्वर को याद करते थे। एक दिन एक देवदूत आया, उसके पास नामों की दो सूचीयां थी। एक सूची में उनके नाम थे जो कि भगवान को प्यार करते थे। दूसरी सूची उन लोगों की थी, जिन्हे भगवान प्यार करता है। भक्त ने देवदूत से पूछा कि क्या उस का नाम पहली सूची में है? देवदूत ने कहा कि आप का नाम सूची में सब से उपर है। प्रसन्न होकर उसने फिर पूछा क्या दूसरी सूची में भी उसका नाम सब से उपर है? वह यह जानकर वहुत हैरान हुआ जब देवदूत ने बताया कि दुसरी सूची में उसका नाम बहुत नीचे था और उसके अमुक पड़ोसी का सब से उपर था। भक्त ने आश्चर्य के साथ कहा ——" किन्तु वह तो भगवान का नाम लेता ही नहीं है। मैने उसे कभी संध्या, पूजा, भजन, कीर्तन करते हुए नहीं देखा। हां, वह दूसरों की सहायता करने, दूसरों के काम करने, बीमारों, गरीबों और दुखियों की सेवा करने में लगा रहता है।"

देवदूत ने कहा——" यही कारण है कि भगवान उसे सब से अधिक प्यार करते हैं। जो भगवान के बन्दों को चाहता है, भगवान भी उसे चाहते हैं।

ऐसे लोग भागवान से क्या प्रार्थना करते हैं,

,हे मेरे स्वामी, हे मेरे प्रभु, यदि आप मुझ से प्रसन्न हैं तो मेरी यह प्रार्थना है——" मुझे राज्य नहीं चाहिये। मुक्ति का आन्नद नहीं चाहिये! एक ही इच्छा है मेरी कि दुखों से तपते हुए लोगों के कष्ट दूर हो जायें।

गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि अगर आप अनजाने में किये जा रहे पापों से बचना चाहते हैं तो दूसरों के लिये त्याग करें और परोपकार की भावना लायें। अगर आप स्वयं ही अपना कमाया धन भोगने लग पड़ेंगें तो याद रखीये भोग आप को भोगना शुरू कर देंगे और आप पापों से बच नहीं सकेगें और उन पापों का फल भोगना पड़ेगा।

"हिरण्यमय पात्रेन सत्यस्य अपिहितं मुखम्"

ईशावास्योपनिषद कहता है, "हिरण्यमय पात्रेन सत्यस्य अपिहितं मुखम्"। अर्थात! सत्यब्रह्म का मुख हिरण्यमय पात्र से ढँका है। यदि इस पात्र की हिरण्यप्रभा को पूरा देखना है तो इसे मुक्त करना होगा, तमस तत्त्व के धूम्र से। वह धूम्र जो प्रकट होता है हमारे भीतर बसे काम–क्रोध–लोभ–मोह से, अज्ञान की जड़ता से, माया की चमक में रमे रहने से। इस धूम्र के कारण ही हमें परमात्मा पूरा नहीं दिखता और यदि धूम्र का घनत्व अति प्रबल है तो परमात्मा दिखता ही नहीं। हममें से अधिकतर लोग इसी श्रेणी में आते हैं। कोई बिरला ही इस धुएँ की पर्तों को उघाड़ पाता है

The message given by Holi- " Life is life with others "

Bhartendu Sood

The scenes of Holi celebrations across the country and even in neighboring countries seem to be giving one message, 'Life is life with others." It is life from and for and with one another. Human life is always lived in community. Man cannot live as an individual. He is a social organism. Even God loves him only who loves other beings and man's glory lies in being a member of a big family.

On the one hand, man is bound by blood kinship-his parents, his wife and children, on the other, he is linked with every individual of the society whether near or far. It is given to man to link himself with those who constitute his ancestry, and also think of those who could be his posterity. Man thus should live, work and die for the society by rising above his kinship" Viduraniti says, Sacrifice the interest of individual for the sake of the family, Sacrifice the interest of the family for the sake of the village Sacrifice the interest of the village for the sake of the country

Vedanta implores the man to rise above kinship in the large interest of the society in which he lives and consider entire universe as his family in the spirit of 'Vasudhav kutumbakam This Vedic philosophy transcends the man made boundaries of caste, origin, religion, race and geographical divisions.

This is beautifully demonstrated by this incident of Mahabharata epic. While in exile Kunti and five Pandvas had to take up different jobs for their sustenance by changing their outward appearance to conceal their identity. One day the lady of the house where Kunti was employed was weeping profusely. When enquired, the lady who was widow, shared her impending misfortune with Kunti something like this-"There lives a Monster in the nearby area who would cause heavy devastations to the inhabitants of the village and often would devour a few. When counseled that monster agreed not to indulge in wanton killings and instead now one person from the village goes to him once in a month with grains and other eatable for his one month requirement and that Monster devours that person too. In the coming month it is the turn of her family but since my only son happens to be the surviving male in my family, I would be rendered childless."

Kunti was moved. Full of gratitude to that lady she thought to herself, "I have five sons even if I lose one still I'd be left with four but this widow's become childless. I should help her out." Back home, she counseled with her sons. All of them looked too eager to be given that opportunity but Kunti selected Bhima because of his well known prowess in the one to one combat. Rest we all know. But, point is-

Kunti in the larger interest of the society did not mind losing her son.

One's duty towards the neighbor, the concept of universal brotherhood and fraternity of mankind coupled with a sense of compassion towards one's fellowmen, gets time and again echoed in the hymns of Vedas. The main prayer in Yajur Veda is for peace and happiness, not in a particular place or country but in the entire Universe that includes all planets. The Vedic hymn, 'Om dyo shanti antariksh, shanty prithvi, shanty rapa, shanty oshadhya, shanty vanaspati, shanty vishve deva, shanty braham, shani shanty' is conveying this lofty ideal.

Published by the Times of India on 28.03.2024

हमारे स्वयं के हित में होता है हमारा दूसरों को प्यार, सम्मान व महत्त्व देना

सीताराम गुप्ता

कई व्यक्तियों की आदत होती है कि उनको आते–जाते रास्ते में जो भी मिलता है वे उसका अभिवादन करना व उसकी कुषल–क्षेम पूछना नहीं भूलते। साथ ही घर–परिवार व बच्चों के बारे में भी वे उससे अत्यंत आत्मीयता से बातचीत करते हैं। परिचितों से ही नहीं अपरिचितों से भी उनका व्यवहार समान रहता है। मैंने कई ऐसे व्यक्ति भी देखे हैं जो अपनी जेब अथवा थैले में टॉफ़ियाँ रखते हैं और जब भी कोई मिलता है तो उसका अभिवादन करने के साथ–साथ प्यार से एक टॉफ़ी भी उसे थमा देते हैं। कई लोग इस प्रकार के व्यवहार को नाटकबाज़ी ही मानते हैं। क्या वास्तव में लोगों का अभिवादन करना अथवा उनकी कुषलता पूछना नाटकबाज़ी ही होता है? यदि हम मन से किसी का अभिवादन करते हैं तो इसे नाटकबाज़ी तो नहीं कहा जा सकता। वास्तव में ये षिश्टाचार का ही एक हिस्सा है और साथ ही समाज में एक दूसरे को महत्त्व, सम्मान व स्नेह देने और उनसे जुड़ने का तरीक़ा भी है।

कुछ समय पहले की बात है कि एक हिंदी फ़िल्म देख रहा था। फ़िल्म और मुख्य पात्र का नाम है मिली। मिली एक मॉल के फूड जंक्षन में काम करती है। एक दिन ग़लती से मिली रेस्टोरेंट के फ़्रीजर रूम में बंद हो जाती है। फ़्रीजर रूम की सरदी के कारण उसकी हालत बहुत ख़राब हो जाती है लेकिन वो उस भयंकर जमा देने वाली सरदी में भी बचने के प्रयासों में कोई कसर नहीं रख छोड़ती। वह कई घंटों तक असहनीय कश्ट सहती है लेकिन अंततः उसे बचा लिया जाता है। इस फिल्म की कहानी में एक किरदार है मॉल का सिक्युरिटी गार्ड। फिल्म में सिक्युरिटी गार्ड के प्रति मिली का आत्मीय व्यवहार और उसके फ़्रीजर रूम में बंद होने की घटना को देखकर मुझे बहुत पहले पढ़ी हुई एक कहानी याद आ गई। एक व्यक्ति एक फ़्रीजर प्लांट में इंजीनियर था। वह वहाँ कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों से हमेषा अत्यंत विनम्रता से पेष आता था और आते–जाते समय सबका अभिवादन करता था।

इंजीनियर के आत्मीय व्यवहार के कारण सभी लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। एक दिन छुट्टी के समय जब

सब कर्मचारी जाने की तैयारी कर रहे थे तो अचानक प्लांट में कोई तकनीकी ख़राबी आ गई। इंजीनियर महोदय प्लांट में आई ख़राबी को सुधारने में लग गए। जब तक उनका कार्य पूरा हुआ काफी देर हो चुकी थी। वो प्लांट के एक ऐसे कोने में कार्य कर रहे थे जहाँ किसी का भी ध्यान उनकी तरफ नहीं गया। छुट्टी के समय सभी कर्मचारी प्लांट के दरवाजे बंद करके अपने–अपने घर चले गए। इंजीनियर महोदय ने काफी ज़ोर–ज़ोर से आवाज़ें लगाईं पर अंदर की आवाज़ें बाहर तक नहीं जा रही थीं। फ्रीजर प्लांट में ठंड बढ़ती ही जा रही थी। बचने का कोई उपाय नहीं दिखलाई पड़ रहा था। इंजीनियर महोदय ठंड के मारे अपनी चेतना खोते जा रहे थे। फ्रीजर प्लांट उनकी कब्रगाह बनता दिखलाई पड़ रहा था।

तभी एक चमत्कार घटित हुआ। वास्तव में हमारे जीवन में जो चमत्कार घटित होते हैं उन चमत्कारों की भूमिका प्रायः हम स्वयं ही लिखते हैं। अचानक फ्रीजर प्लांट का दरवाज़ा खुला और एक सिक्युरिटी गार्ड अंदर आया। उसने सारी लाइटें जला दीं और इंजीनियर महोदय को पुकारने लगा। सिक्युरिटी गार्ड उन्हें खोजकर बाहर निकल लाया। इंजीनियर महोदय ने उनकी जान बचाने के लिए सिक्युरिटी गार्ड के प्रति आभार व्यक्त किया और उससे पूछा, "आपको कैसे पता चला कि मैं अंदर रह गया हूँ?" सिक्युरिटी गार्ड ने जवाब दिया, "सर इस प्लांट में कई दर्जन लोग काम करते हैं लेकिन आप अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो हर रोज़ आते हुए मेरा हालचाल पूछते हैं और जाते हुए बाय कह कर जाते हैं। मुझे याद आया कि आपने सुबह तो मेरा हालचाल पूछा था लेकिन षाम को आपसे मुलाकात ही नहीं हुई। मुझे कुछ अनहोनी की आषंका हुई और मैं आपको ढूँढ़ता हुआ अंदर चला आया।"

हमारी अच्छी आदतें विषेश रूप से हमारा किसी को प्यार व सम्मान अथवा महत्त्व देना विशम परिस्थितियों में हमारे जीवन तक को बचा सकता है इसमें संदेह नहीं। ये सब बातें नई नहीं हैं। हम सब इन बातों को जानते हैं लेकिन अहंकारवष अथवा अन्य कारणों से उन्हें अपने व्यवहार में नहीं लाते। कई बार जब अन्य लोग सबके साथ इस प्रकार का व्यवहार करते हैं तो हम उसे नाटक समझने की ग़लती कर बैठते हैं। यहाँ भी हम बहुत बड़ी भूल करते हैं। यदि अच्छी बातों को नाटक के रूप में किया जाता है तो वही अच्छी बातें एक दिन हमारे आचरण में सम्मिलित हो जाती हैं। इसलिए हमें स्वयं भी ऐसा नाटक करने से परहेज़ नहीं करना चाहिए। वैसे भी किसी को नमस्कार करने, किसी की कुषलता के विशय में पूछने अथवा मुस्कराकर बात करने में किसी का कुछ नुकसान नहीं होता लेकिन आंतरिक प्रसन्नता अवष्य मिलती है।

दूसरे हम जिन्हें कमतर अथवा बहुत सामान्य समझने की भूल करते हैं वे किसी भी तरह कम महत्त्वपूर्ण नहीं होते। जब हमारी गाड़ी रुककर खड़ी हो जाती है और उसे धक्का देने की ज़रूरत होती है तब ये सामान्य व्यक्ति ही हमारी गाड़ी को धक्का देकर उसे दोबारा चालू करने अथवा आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। हमें चाहिए कि हम कभी किसी की उपेक्षा न करें अपितु रोज़ मिलने–जुलने वालों से बातचीत करें। अपने आसपास के ऐसे व्यक्तियों से न केवल आत्मीयतापूर्वक पेष आएँ अपितु उनको यथेश्ट सम्मान व महत्त्व भी दें। उनके कार्य की प्रषंसा करें। उम्र में बड़े लोगों को विषेश रूप से सम्मान दें। जब कोई हमारे साथ अच्छी तरह से पेष आता है, हमें मान देता है तो हम उसके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहते हैं। जब हम किसी के साथ अच्छी तरह से पेष आएँगे, किसी को महत्त्व देंगे तो वो भी हमारी उपेक्षा नहीं करेगा।

हमारे पास धन–दौलत अथवा अन्य किसी भी प्रकार की समृद्धि आती है तो हम उसे सहेज कर रख लेते हैं। धन की प्रायः तीन गतियाँ कही गई हैं – सदुपयोग, दुरुपयोग अथवा विनाष। यदि हम अर्जित धन–दौलत अथवा समृद्धि का सदुपयोग नहीं करेंगे तो उसका दुरुपयोग अथवा विनाष अवष्यंभावी है। समझदार व्यक्ति अपने धन–दौलत का न केवल सदुपयोग करते हैं अपितु अतिरिक्त धन–दौलत को किसी उपयोगी व्यवसाय में लगा देते हैं

अथवा बैंक में डाल देते हैं। पैसा भी सुरक्षित हो जाता है और अतिरिक्त आय भी नियमित रूप से होती रहती है। अच्छी आदतों अथवा सद्गुणों के संबंध में भी यही बात कही जा सकती है। सद्गुणों का उपयोग नहीं करेंगे तो उनका भी विनाष हो जाएगा और उनसे होने वाले लाभों से हम वंचित रह जाएँगे। ये एक ऐसा निवेष है जिसे हर व्यक्ति न केवल सुगमतापूर्वक कर सकता है अपितु जितनी अधिक मात्रा में चाहे कर सकता है। हमारी अच्छी आदतों, सद्गुणों व हमारे आत्मीय व्यवहार के कारण ही लोग हमारा ध्यान रखने को विवष हो जाते हैं।

जैसा कि ऊपर के उदाहरण से स्पश्ट है कई बार तो कुछ अच्छी आदतें हमें मृत्यु के मुख तक में से खींच लाती हैं। लेकिन ये तभी संभव है जब हमारी बातों व व्यवहार में सचमुच आत्मीयता हो। कई व्यक्ति किसी से मिलने पर घंटों बातें करते रहेंगे लेकिन एक भी बात ऐसी नहीं करेंगे जिसमें सामने वाले की रुचि हो अथवा जिससे उसे अपनापन लगे। हम सब अपने मिलने–जुलने वाले लोगों से आत्मीयता, प्यार व सम्मान ही तो चाहते हैं और जो ऐसा करता है हम उसके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहते हैं। हमें भी अपनी बातचीत में न केवल दूसरों की रुचि का ध्यान रखना चाहिए अपितु हमारी बातचीत व व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिससे दूसरे व्यक्ति स्वयं को महत्त्वपूर्ण व सम्मानित अनुभव करें। लोगों के प्रति हमारा आत्मीय व्यवहार कभी निश्फल नहीं जाता। अपने अच्छे व्यवहार व आत्मीयता से हम किसी को भी हमेषा के लिए अपना दोस्त व मददगार बना लेते हैं। इसे जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि कहा जा सकता है।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली – 110034
मोबा0 नं0 9555622323

महर्षि दयानंद के अछूत प्रथा के बारे में विचार

महर्षि दयानंद मनुष्य समानता के बहुत प्रवल समर्थक थे। इस बारे में वह सत्यार्थप्रकाश में लिखते है।

शूद्र ईश्वर की वैसे ही सर्वश्रेष्ठ कृति हैं जैसे कि दूसरे वर्गो के लोग। उनसे घृणा करना, अस्पृश्य समझना बहुत ही घृणित सोच है।हम कुतों को पालते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैंसों का दूध पीते है, उंटों की सवारी करते हैं और अपने जैसे मनुष्यों को ही अछूत समझें, इस से बड़ा पाप और अन्याय नहीं हो सकता। आगे वह शुद्रों के वेद पढ़ने के अधिकार के बारे में लिखते हैं—— जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और बनस्पति सब के लिये बनाये हैं वैसे ही वेद भी सब के लिये है।"

Vedas are the revelation of God

Bhartendu Sood

Pointing out to the lofty and sublime character of Vedic teachings in his book Veda Bhashya, Maharishi Dayanand Saraswati says that Vedas are not scripted by men but are the words of God. After the creation of this universe God revealed the four Vedas Rig, Yajur, Sama and Atharva to four Rishis (sages) Agni, Vayu, Aditya and Angiras respectively.

That four Vedas are the creation of God is supported by the hymn in Rig Veda. In this hymn God says "I, O men lived before the whole universe came into existence. I am the Lord of all. I am the source and giver of all wealth. Let all human beings look up to me alone as children do to their parents. I am the revealer of Vedas which declare my true nature. It is through the Vedas I advance the knowledge of everything for your happiness."

Vedas are called Shrutis; that which is heard implying again that the rishis did not create Vedas out of their minds. The Rishis to whom Vedas were revealed were pious, highly realised and enlightened who had direct intuitive perception of God. To say that what is contained in Vedas were the spiritual discoveries of their divine thoughts will not be wrong. The four Vedas are repositories of knowledge having germs of all sciences in eleven hundred and eighty recensions contained in these and are absolutely free of error. Nature and properties of matter and the soul are propounded in just accordance with what they really are. Only Divine creation could meet such lofty character. Vedas are eternal and do not owe their authority to any one.

To a query why God gave Vedas, Dayanand's reply was " When the merciful God had created air, water, roots, fruits, rivers, mountains, minerals etc. for the enjoyment and happiness of his subjects, how could He have left out revealing the knowledge to use these unto them to realize *dharma, artha, kama and moksha,* the ultimate goal of human life. And Vedas are all about this knowledge

As the parents are kind to their children and wish for their welfare, so is supreme power. Out of kindness to all men He revealed Vedas by whose study men are freed from ignorance and error.

ध्यान की महिमा

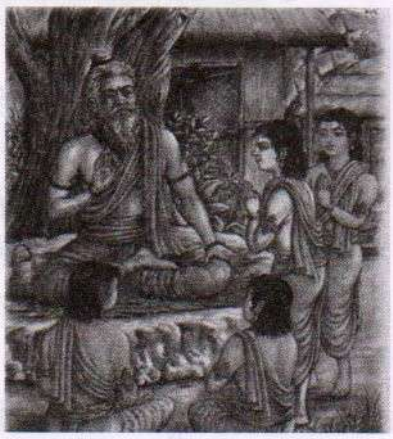

भगवान राम ने अपने गुरूवर वसिष्ठ से पूछा------"गुरूवर ! शरीर को ठीक रखने के लिये तो प्रतिदिन हम अच्छे से अच्छा पोष्टक भोजन देते हैं, आत्मा को क्या खिलाये?

गुरूवर वसिष्ठ बोले------" हे राम आत्मा का भोजन ईश्वर का ध्यान है। जब तक मनुष्य ध्यान नहीं करता आत्मा तृप्त नहीं होती।"

महषि दयानन्द सरस्वती भी बहुत सुवह पहले ध्यान ही करते थे जिसे ब्रहम यज्ञ का नाम दिया है।

संक्षिप्त सत्यार्थप्रकाश ,
महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश से चयनित अंश
कृष्ण चन्द्र गर्ग द्वारा लिखित पुस्तक से

बाल शिक्षा विषय दूसरा समुल्लास

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता।

इसलिए (मातृमान्) अर्थात 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्। धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे। माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्ध, रूक्ष, बुद्धिनाश्क पदार्थों को छोड़ दें।

ऐसे पर्दाथों का सेवन करे जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करवाऐ जैसे धृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रजस् वीर्य्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हो। जब दोनों के शरीर में आरोग्य, परस्पर प्रसन्नता, किसी प्रकार का शोक न हो। जैसा चरक और सुश्रुत में भोजन छादन का विधान और मनुस्मृति में स्त्री पुरुष की प्रसन्नता की रीति लिखी है उसी प्रकार करें और वर्तें। गर्भाधन के पश्चात् स्त्री को बहुत सावधानी से भोजन छादन करना चाहिए। बुद्धि, बल, रूप, आरोग्य, पराक्रम, शान्ति और गुणकारक द्रव्यों ही का सेवन स्त्री करती रहै कि जब तक सन्तान का जन्म न हो। जब जन्म हो तब अच्छे सुगन्धियुक्त जल से बालक को स्नान, नाड़ीछेदन करके सुगंधियुक्त घृतादि का होम और स्त्री के भी स्नान भोजन का यथायोग्य प्रबन्ध करें कि जिससे बालक और स्त्री का शरीर क्रमशः आरोग्य और पुष्ट होता जाय। ऐसा पदार्थ उसकी माता खावे कि जिससे दूध में भी उत्तम गुण प्राप्त हों।

गाय या बकरी के दूध में उत्तम औषधि जोकि बुद्धि, पराक्रम, आरोग्य करने हारी हों उनको शुद्ध जल में भिजा, औटा,

छान के दूध के समान जल मिला के बालक को पिलावें। जन्म के पश्चात् बालक और उसकी माता को दूसरे स्थान जहाँ का वायु शुद्ध हो वहां रखें सुगंध तथा 8 दर्शनीय पदार्थ भी रखें और उस देश में भ्रमण कराना उचित है कि जहां की वायु शुद्ध हो । बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्ठा न करने पावें। जब वह कुछ–कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े–छोटे, मान्य, पिता, माता, राजा, विद्वान, आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो के सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करें। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रुचि करें वैसा प्रयत्न करते रहैं। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करें। उपस्थेन्द्रिय के स्पर्श और मर्दन से वीर्य की क्षीणता, नपुंसकता होती और हस्त में दुर्गन्ध भी होता है इससे उसका स्पर्श न करें। सदा सत्यभाषण शौर्य, धैर्य, प्रसन्नवदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो, करावें।

जब पांच–पांच वर्ष के लड़का लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य–देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता, पिता, आचार्य, विद्वान, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, बन्धु, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे–कैसे वर्त्तना इन बातों के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें। जिनसे सन्तान किसी धूर्त के बहकाने में न आवे और जो–जो विद्याधर्मविरुद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं उनका भी उपदेश कर दें, जिससे भूत प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

जब गुरु का प्राणान्त हो तब मृतक शरीर का नाम प्रेत है। और जब उस शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है अर्थात वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उत्पन्न हों, वर्तमान में आ के न रहें वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है परन्तु जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है उसको भय और शंकारूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं।

देखो! जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर 9 धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थविद्या के पाड़ के इनको निकाल दें। तब वे अंधे और उनके सम्बन्धी बोलते हैं कि 'महाराज! चाहे हमारा सर्वस्व जाओ परन्तु इनको अच्छा कर दीजिए। वे धूर्त कहते हैं अच्छा लाओ इतनी सामग्री, इतनी दक्षिणा, देवता को भेंट और ग्रहदान कराओ। झांझ, मृदंग, ट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं। क्योंकि वह उनका केवल धनादि हरण करने के प्रयोजनार्थ होता है।

जब आँख के अंधे और गांठ के पूरे उन दुर्बुद्धि पापी स्वार्थियों के पास जाकर पूछते हैं कि महाराज! इस लड़का, लड़की, स्त्री और पुरुष को न जाने क्या हो गया है? तब वे बोलते हैं कि इसके शरीर में बड़ा भूत, प्रेत, भैरव, शीतला आदि देवी आ गई है, जब तक तुम इसका उपाय न करोगे तब तक ये न छूटेंगे और प्राण भी ले लेंगे। जो तुम मलीदा वा इतनी भेट दो तो मन्त्र जप पुरश्चरण से झाड़ के इनको निकाल दें। तब वे अंधे और उनके सम्बन्धी बोलते हैं कि 'महाराज! चाहे हमारा सर्वस्व जाओ परन्तु इनको अच्छा कर दीजिए। तब तो उनकी बन पड़ती है। वे धूर्त कहते हैं अच्छा लाओ इतनी सामग्री, इतनी दक्षिणा, देवता को भेंट और ग्रहदान । बच्चों को ठीक बातों का ज्ञान देकर माता पिता काकर्तव्य है कि इन ठगों से बचाए।

यदि हम अपने बच्चों का बचपन्न का ऐहसास करवाना चाहते हैं तो उन्हें मोवाईल से दूर रखें।

नीला सूद

अभी हाल की बात है, शाम का समय था मैं एक लोकल बस में बैठी तो मेरे साथ अपने ओफिस से छुटी होने के बाद एक युवती ने आकर स्थान लिया और एक मिन्ट बाद ही अपने मोवाईल द्वारा अपने बेटे के साथ विडियो चैट शुरू कर दी। जैसे उस के मोवाईल पर नजर की तो देखा , उस बच्चे आयु मुश्किल से 5 वर्ष होगी। जब 15–20 मिन्ट बाद उनकी बात खत्म हुई तो मैने उस से पूछ ही लिया––क्या आप ने अपने बच्चे को समार्ट फोन ले दिया है। उसका तपाक से जवाब आया––आजकल समार्ट फोन के बगैर जीवन ही सम्भव नहीं। मैने कहा आप के लिए तो मान गए परन्तु क्या बच्चे के लिए भी आवश्यक है। बिल्कुल, अब इस समार्ट फोन के करण ही मैं ओफिस से 6–7 बार बात कर लेती हूं, बाकी समय बच्चा मोवाईल पर गेम्ज खेल लेता है। देखिए न कितना फायदा है।

हमारे चण्डीगढ़ में हर सैक्टर में पार्को की भरमार है। परन्तु यह पार्क खाली नजर आते है। हां कुछ काम करने वालों के बच्चे नजर आ जाते है। बच्चों का खुले मैदानों में स्वतन्त्र रूप से खेलना खत्म हो गया है। पहले बच्चे पैदल या साईकल पर स्कूल जाया करते थे आज सब बसों में जातें हैं व अक्सर सब के पास मोवाईल होता हैं व आंखें उस में गड़ी होती है। ओन लाईन टीचिंग एक आयु के बाद तो ठीक मानी जा सकती है परन्तु मैं नहीं समझती स्कूल में जाने वालें बच्चों के लिए यह ठीक है। बच्चों में चिन्ताग्रस्त रहना व बहुत बार डिपरैशन का शिकार हो जाना बड़ रहा है। यह हाल भारत के ही नहीं पूरे विश्व के बच्चों हैं। फर्क यह है कहीं अधिक व कहीं कम है। अमेरिका व चीन में यह बिमारी 10 साल पहले आ गई थी व आज वह इसके नुकसानों से वाकिफ हो गए है व बच्चों द्वारा मोवाईल का प्रयोग कम करने की कोशिश कर रहें है।

यदि आप लोकल बस द्वारा सफर करें तो देखेंगें कि बड़ी कलासें में स्कूल के बच्चों के पास अक्सर समार्ट फोन है। परन्तु प्रयोग सोशल मिडिया साईटस के लिय हो रहा है। माता पिता भी बच्चों के लिए जरूरत से अधिक चिन्तित रहनें लगें है। वह भी चाहते है कि उनको बच्चें की मिन्ट मिन्ट की खबर रहे। खुद तो बिना बात के ही चिन्तित रहते ही हैं, बच्चे को भी हर समय चिन्तित रहने की आदत डाल देते है। एक और बात जिस को बड़ावा मिल रहा है वह है कि मांता पिता चाहते है कि बाहर खुले मैदान में जाने की बजाए बच्चा घर में ही उन के पास ही घर में खेलता रहे। आहिस्ता आहिस्ता बच्चा भी वैसा ही बन जाता है।

जिन्दगी के सफर में वही उपर उठते हैं जिन्हें रूकावटों का, कठिनाईयों का सामना करना आता हो, आवश्यकता पड़े तो जोखिम लें सके, बजाए इसके की हर चीज के लिए माता पिता को फोन कर दिया खुद उस हालात का समाधान निकाल सकें। परत्तु जब हम इस समार्ट फोन द्वारा हर छोटी से बड़ी बात के लिए बच्चे को अपने उपर निर्भर रहने की आदत डाल देते है, तो यह गुण उनके जवान होने पर भी उन में नहीं आते, वह फोन करने तक ही सक्षम हो जाते है।

इन समार्ट फोन द्वारा एक और बड़ा नुकसान यह हो रहा है कि बच्चों को हर समय अपनी फोटो लेकर उस सोशल मिडिया में डाल कर उसकी प्रतिक्रिया लेने की आदत हो रही है। इसी तरह दूसरों की जो फोटो आती है उस की प्रतिक्रिया देना स्कुल या घर के काम करने से भी आवश्यक हो गया है। कई बार गलत व्यक्ति इन फोटों का दुप्रयोग करने से नहीं हिचकचाटे।

इसका उपाय वही है कि 16 साल से कम आयु के बच्चे को कानून द्वारा समार्ट फोन की उपलबधता खत्म की जाए। ओन लाईन कलासें केवल 11 वी कक्षा कें बाद हो। शिक्षा केवल कुछ कक्षंए पास कर लेना ही नहीं अपितु इस में शारिरिक, मानसिक व अध्यात्मिक उन्नती तीनों ही आते है। यह तभी सम्भव है जब बच्चों का ध्यान तीनों में होगा

जब पांच–पांच वर्ष के लड़का लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य–देशीय भाषाओं के अक्षरों का

SAKSHI BHAVA (THE STATE OF ETERNAL WITNESSING)

Ishwar Lamba

In order to realize the Atman (Self), the mind has to dissolve. As long as there is mind, you will be dominated by the ego.

One needs to understand the state of sakshi bhava, or witness consciousness. One may wonder if witnessing is a function of the mind, or is it an experience beyond the mind.

No, it is not a function of the mind. Sakshi bhava is a state in which you remain constantly detached and untouched, simply watching everything that happens, without the interference of the mind and it's thoughts. You cannot be a witness to everything if there is a constant interference of the mind. The mind consists of thoughts. It can only think and doubt. In that supreme state of witnessing, you constantly abide in your true nature.

In sakshi bhava you become a witness to everything. You simply watch everything. There is no attachment or involvement. There is only watching. You will even witness your own thoughts. As you consciously observe your own thought process, you are not thinking - you are not doing anything. You are still. You are simply watching and enjoying, without being moved or affected by anything. How can the mind be in a state such as this? The mind can only think, doubt and cling. It cannot witness.

The thinking process belong to the mind, whereas witnessing belong to the higher Self. Witnessing is a state of abiding in Pure Consciousness. The ego and it's thoughts are not real. They are the fiction of your own creation.

Consciousness alone is real.

Thinking may seem natural to you, but it is not natural. It is not a part of your real existence. Your thoughts and your ego create nothing but restlessness and agitation. They don't belong to you, and you will continue to be restless until they are eliminated.

Witnessing is the state of simply watching with perfect awareness. In the state of sakshi bhava you are absolutely conscious. On the other hand, when you are identified with your mind and thoughts, you are not conscious - you are far away from Pure Consciousness.

You are in darkness and cannot really see. The mind sees only the external world, the outer shape of things. It can never see something as it really is because you never see, you only think. And when you think you miss the thing as it is.

More and more accumulation and indulgence will only create more thoughts, and more thoughts will drive you away from your real Center. In order to witness, one needs to be established in a supreme state of detachment. A clinging mind cannot witness; it can only be attached to thoughts and objects. It cares only about 'I' and 'mine.' In witnessing there is no experience of 'I' and 'mine.' You go beyond all such limited, narrow thoughts.

Once you have attained the state of sakshi bhava (where there is no more conceptual thoughts, only eternal witnessing), everything becomes a beautiful, delightful game - a wonderful play. You are just watching, just witnessing.

Witnessing at the level of pure consciousness without the interference of the mind, also termed as immersion in the Infinite. That supreme state of witnessing is the pivot around which all of life and the whole universe revolves. You may work, use your mind and your intellect; you may live in a

house and have a family, you may have a lot of family responsibilities and you may have a lot of official duties to perform, but once you are established in sakshi bhava, in the real Center, you can do anything without moving even an inch out of that center.

Being in the state of sakshi bhava does not mean that you will remain idle without taking care of your duties. You may be concerned about your children's studies, the health of your parents and your wife and so on, yet in the midst of all these external problems you remain a sakshi, a witness to all that happens and to all that you do. Within, you are perfectly still and unperturbed.

PERSPECTIVE ON THE ABOVE

Awareness is the only reality and our true nature. Instead of realizing and abiding in this eternal reality, the illusive I-Thought and World Appearance which is perceived as real while the underlying never-changing reality being awareness is not perceived due to the thoughts and conditioning of the mind and ego. Yet mind is only a collection of thoughts, without thoughts there is no mind. Ego also is only the result of thoughts which result in the creation of concepts and notions such as 'I' vs 'them' on the outside of the body, when in reality there is no inside nor outside, everything is the one consciousness. Without thoughts there is no ego and no mind.

The power that illumines the mind is awareness the heart, the light of the mind is merely a reflection of the light of the heart. When conceptual thoughts come to an end (the aim of all meditation and spiritual disciplines), then mind ceases to exist and awareness the heart alone rises like the sun displaying the ever present reality which is the pure awareness of the infinite Self that is in all places and within all things. From the time the mind is dissolved, external circumstances no longer affect the inner bliss of conscious union with the Infinite consciousness that is one's true Self that is awareness.

Again, in the simplest sense, the only thing that hides the reality of awareness being the sole reality all around us is the conceptual thoughts of the mind. When such thoughts are brought to an end dissolving the mind, awareness alone is seen everywhere and in all things.

Shri Ishwar Lamba had met me in Sydney where he was residing. Detached from the world, now he is leading a life of a sage in Palampur (Himachal Pradesh) He can be contacted on

नीद अपनी भूला के,सुलाया हम को,
आंसू अपने गिरा के हंसाया हमको,
दर्द कभी न देना उन हस्तियों को,
खुदा ने मां बाप बनाया जिनको

जीवित माता पिता और घर में दूसरे बजूर्गो की सेवा ही श्राद्ध और पितृ यज्ञ है।

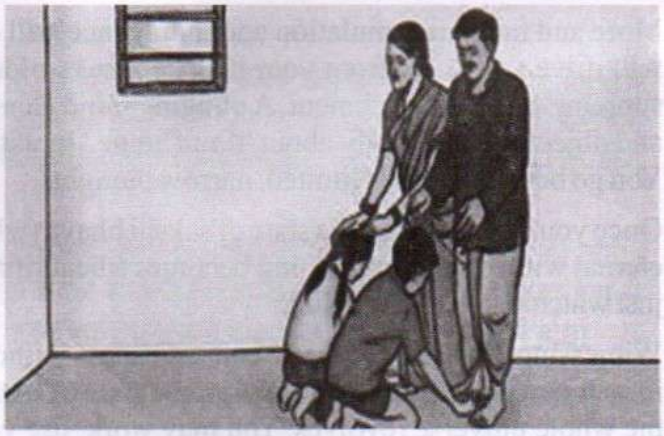

What's in a name?

What's in a name? But I say name gives a person a feeling of importance. Here is a real life story.. There was a person named Jim Farley. He never saw the inside of a school; but before he was 46 years of age, four colleges had honoured him with degrees and he had become the chairman of the Democratic National Committee and Postmaster General of the United States. Jim Farley discovered early in life that an average person is more interested in his or her name than in all other names on the earth put together. Remember that name and call it easily, and you have paid a subtle and very effective compliment.

Once in an interview, Jim Farley was asked about the secret of his success. He said, 'Hard work' and the interviewer said, "Don't be funny." Farley then questioned the interviewer...what do you think is the secret of my success? He replied: "I understand that you can call ten thousand people by their first names." "No. You are wrong." Farley said. "I can call fifty thousand people by their names."

Make no mistake about it. This ability helped Farley to put Franklin D Roosevelt in the White House when he managed Roosevelt's campaign in 1932.

Most people don't remember names. They make excuses for themselves that they are too busy. But they are probably no busier than Franklin D Roosevelt, he took time to remember names and recall even the names of the mechanics with whom he came into contact. One of the first lessons a politician learns is this "To recall a voter by name is statesmanship. "

I came to know about the importance of a name. Hope you will remember that a person's name is to that person the sweetest and most important sound in any language. From the waitress to the senior executive, the name will work magic as we deal with others

---

आसक्ति, भक्ति और वाचक भक्ति

काम क्या है ?	भोगों में आसक्ति
क्रोध क्या है ?	स्वभाव में आसक्ति
लोभ क्या है ?	धन में आसक्ति
मोह क्या है ?	स्वजनों में आसक्ति
अंहकार क्या है ?	अंह में आसक्ति
भ्रष्टाचार क्या है ?	स्वार्थ में आसक्ति

इस प्रकार आसक्ति व्यक्ति को सब पापों की और ले जाती है।
इस से छूटने का उपाय है प्रभु भक्ति । परन्तु वही भक्ति जिस में ईश्वरीय गुणों को धारण किया जाये न कि वाचक भक्ति जिस में केवल जाप ही करते रहे।

प्रकृति हमें दयालु बनने का संदेश देती है।

एक बार की बात है, चीन देश के एक महात्मा को ज्ञात हो गया कि अब उनकी मृत्यु बहुत पास है। उनके सभी चेले उनके पास बैठ गऐ और उनें आखरी शब्द सुनने के लिये आतुर नजर आये।

जब वहुत प्रतिक्षा के बाद भी वह कुछ न बोले तो उनके श्रधालुओं ने उनसे प्रार्थना कि वह उन्हें इस संसार से विदा होने से पहले कोई संदेश देकर जायें। महात्मा चुप रहे, फिर कुछ देर बाद अपने एक चेले से कहा कि वह उनका मुंह खोल कर देखे कि अभी तक उसके कितने दांत है? चेले ने मुंह खोला और बोला----गुरू देव, दांत तो एक भी नहीं है।"

महात्मा ने फिर से मुंह खोला और बोले----देखो क्या जीभा है? शिष्य ने देखकर बोला----हां गुरू देव, है।

महात्मा ने सभी शिष्यों को पास में बिठाया और बोले----देखों जीभा जन्म के समय भी थी और अब जब मैं मृत्यु के नजदीक हूं तब भी है। जब कि दांत जन्म के कुछ समय बाद आये थे और मृत्यु से पहले ही चले गये है। बताओ इस का क्या कारण हो सकता है। कोई भी शिष्य इसका जवाब नहीं दे सका। तब महात्मा बोले----इसका कारण यह है कि जीभा नरम है इसलिये अपने स्थान पर बनी हुई है जब कि दान्त सक्त हैं इस लिये उखड़ गये है। इस लिये जीभा की तरह सदैव नर्म रहें ऐसा करने पर आप लम्बे समय तक कहीं भी बने रहेंगे और दान्त की तरह सख्त न बने आप स्वयं ही उखड़ जाओगे। प्रकृति हमें यही संदेश दे रही है।

उस महात्मा की बातों में एक सच्चाई छिपी हुई है। यदि हम विनम्र रहेंगे तो अपने सर्म्पक में आने वालों का दिल जीत लेंगे, अधिक मित्र बनेंगे और जीवन अधिक रूचिकर होगा। इसके विपरीत, सब योग्यतायें होते हुये भी अगर हम कठोर स्वभाव के होंगे तो शायद हमारे चाहने वाले भी हम से दूर ही रहेंगे। विनम्रता एक बहुत बड़ा गुण है और यह मुश्किल परिस्थितियों में भी व्यकित का रास्ता आसान कर देती है।

मातृ देवो भव, पितृ देवो भव--
माता पिता को देवता के तुल्य समझो

नीद अपनी भूला के,सुलाया हम को,

आंसू अपने गिरा के हंसाया हमको,

दर्द कभी न देना उन हस्तियों को,

खुदा ने मां बाप बनाया जिनको

जीवित माता पिता और घर में दूसरे

बजूर्गो की सेवा ही श्राद्ध और पितृ यज्ञ है।

निवृत मन (a detached mind)

एक बार एक राजा, पास के ही किसी पर्वत पर सुवह सुवह भ्रमण के लिये निकल पड़ा। अभी कुछ दूर ही पहुंचा था कि बूंदा बांदी होने लगी, और राजा को महल की और वापिस मुड़ना पड़ा। राजा क्या देखते हैं कि रास्ते के किनारे एक साधु बैठा हुआ है। उसे न तो सम्भावित बारिश की कोई चिन्ता थी, न तो उस के शरीर पर कोई वस्त्र ही था, न ही उसके पास कोई भिक्षा पात्र ही था, न कोई खाट न ही कोई झोंपड़ी ।राजा उस साधु की हालत देखकर विचार करने लगा कि मैं कैसा आयोग्य राजा हूं कि जिस के राज्य में साधु इस हालत में रहने पर मजबूर है।

अगले दिन राजा ने सेवक के द्वारा उस साधु को कुछ धन राशी भेज दी। साधु ने जबाव दिया कि किसी जरूरतमन्द या भिखारी को दे दो। सेवक ने जब साधु का जबाव राजा को बताया तो राजा ने सोंचा कि शायद भेजी हुई धन राशी साधु को कम लगी। उस ने अगले दिन अधिक धन राशी देकर सेवक को भेजा पर वही उत्तर मिला कि किसी जरूरतमन्द या गरीब भिखारी को दे दो। अब की बार राजा बहुत बड़ी राशी लेकर स्वयं साधु के पास गये। साधु ने राजा को भी वही उत्तर दिया कि जरूरतमन्द या किसी गरीब भिखारी को दे दो। राजा ने सुना तो बोले———स्वामी

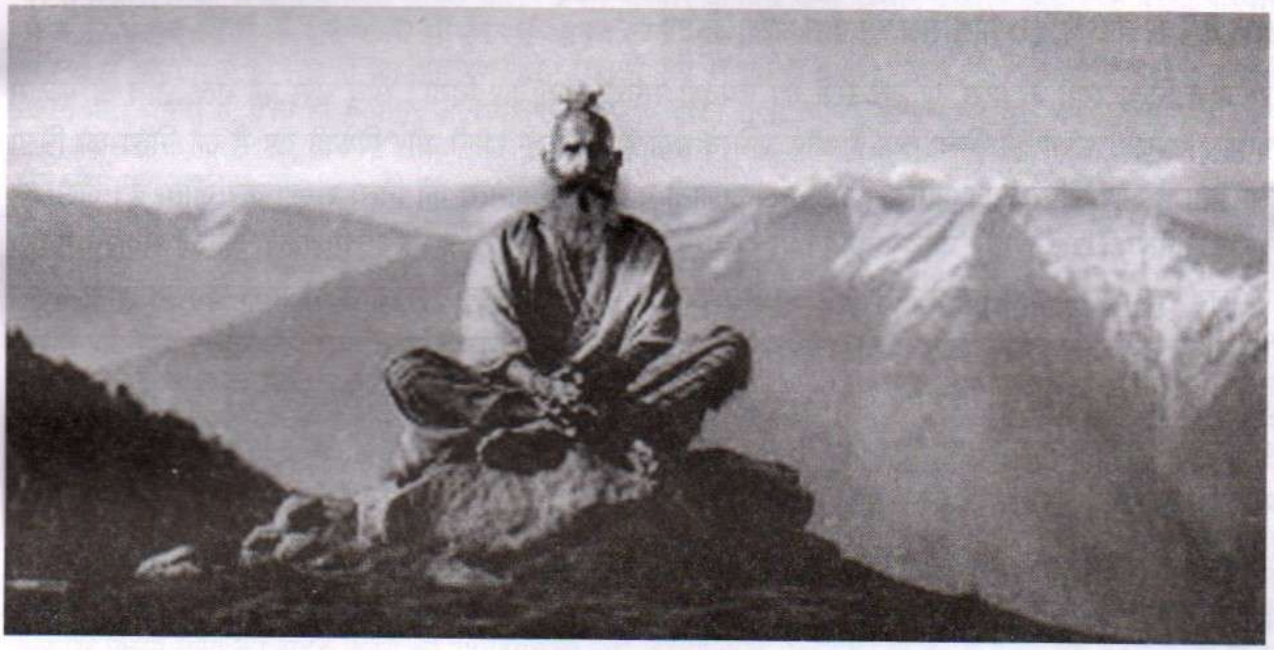

जी आप से बढ़कर दीन मुझे तो नजर नहीं आया, न तो रहने को झोंपड़ी है, न तन ढकने के लिये कपड़े और न खाने के लिये भोजन। साधु ने झट से उत्तर दिया——मुझ को दीन तो आप समझ रहें हैं, मैं तो राजा हूं। राजा मन में ही मुस्करा दिये और साधु को समझाने के लिये बोले। राजा तो वह होता है जिस के पास सेना होती है, आपके पास सेना कहां है? साधु ने सुना तो बोले———उनको भय होता है इस लिये सेना रखते हैं। जब हमें किसी भी चीज का भय ही नही तो सेना किस लिये रखें?

राजा ने कहा ———राजाओं के पास तो धन का खजाना होता है। आप के पास खजाना कहां है। साधु ने सुना तो बोले———खजाना तो वह रखते हैं जिन्हे भविष्य की चिन्ता सताती है। मुझे भविष्य की चिन्ता ही नही तो खजाना किस लिये रखूं? मेरे पास तो ऐसा रसायन है कि जब चाहूं किसी भी पत्थर को साने का बना दूं। ऐसे में खजाना रख

कर क्या करूंगा। सामने यह पहाड़ देख रहे हो न, इसे जब चाहूं सोने का बना दें। यह उत्तर सुन कर राजा चल दिये। रास्ते में सोचने लगे कि इस साधु के पास अवश्य यह अनुठा रसायन है वरना मेरी उस आपार राशी को न ठुकराता।

महल में जा कर सोचा, क्यों न इस साधु को प्रार्थना कर एक – दो लाख मोहरें बनवाली जायें। मुश्किल के समय काम आयेंगी और पास के राजाओं पर प्रभाव भी बड़ेगा। राजा ने विचार किया कि रात के समय ही जाकर उस से मिल लेता हूं ताकी किसी को पता भी न लगे। देर रात्री राजा एक घोड़ागाड़ी मे एक लाख के करीब तांवे की मुद्रायें लेकर उस साधु की और चल दिये। साधु ने इतनी रात्री में किसी को अपने पास आते देखा तो पूछा———कौन है? राजा ने कहा ——मैं यहां का राजा आपकी सेवा में आया हूं। पर इस समय आने की क्या आवश्यकता पड़ गई?—साधु ने पूछा । राजा ने सब भूमिका बता कर साधु से निवेदन किया कि वह एक लाख के करीब तांवे की मुद्राओं को सोने की मुद्राओं में बदल दे।

साधु हंस दिया और बोला——अब बता दीन कोन है, मैं कि तू। मांगने तू आया है कि मैं,? यह सुनकर राजा ने कहा———निस्संदेह दीन तो मैं हूं। आप दया कर, तांवे की मुद्राओं को सोने की मुद्राओं में बदल दे। साधु ने कहा बना देंगे पर तेरे को कुछ दिन रोज मेरे पास आना होगा।

राजा ने नित्य साधु के पास आ कर उस का उपदेश सुनना शुरू कर दिया। साधु उस को तत्व ज्ञान के बारे में बताता। अर्थात संसार में नित्य क्या है और अनित्य क्या है। असली ज्ञानी और विवेकी वह है जो नित्य को नित्य समझता है और अनित्य को अनित्य। और मूर्ख अज्ञानी वह है जो अनित्य को नित्य समझ कर जीता है। जैसे यह शरीर अनित्य है, सदैव रहने वाला नहीं हैं। पर अज्ञानी व्यक्ति इस शरीर को नित्य समझकर इस को संवारने में इस के लिये सुख आराम की सामग्री बटोरने में लगा रहता है। वह सुख को धन में ढूंढता है। इस के विपरीत ज्ञानी मनुष्य शरीर को नहीं अपितु आत्मा को नित्य जानकर उस को ज्ञान, विवेक द्वारा कल्याण मार्ग का पथिक बन कर उन्नत करता है और मोक्ष को प्रापत होता है। वह जानता है कि धन की तृष्णा कितनी दुंखदायक है। यही नहीं तृष्णावश मनुष्य अनित्य को नित्य बनाने हेतु सहस्रों प्रकार के पाप करता है। कुछ महीने में ही राजा साधु के उपदेश सुनकर तत्वज्ञान का विद्वान हो गया और उसकी वासनायें नष्ट हो गई।

साधु ने जब देखा कि राजा अब दीन नहीं रहा और उसकी आत्मदशा सुधर गई है तो उसने राजा से कहा—— जाओ अपनी तांवे की मुद्राओं को ले आओ हम उन्हें सोने की मुद्राओं में बदल देंगें।

राजा ने हंसकर उत्तर दिया———महात्मा ! आपके उपदेश ने ताम्र को सुवर्णबना दिया है। अब सोने की मुद्राओं की कोई आवश्यकता नहीं

मन की दो दिशाऐं हैं। पहली प्रवृत मन जो कि संसार के सुखों को पाने के लिए हर समय व्यस्त है।ईश्वर की कृपा स कार है परन्तु वह इस से महंगी कार जो कि समाज में उसके प्रभुत्व को बड़ाता है उसे पाने की कामना करता है और उसके लिए प्रयत्न कर रहा है यही नही ठीक गलत में पड़े बगैर कुछ भी साधन प्रयोग करता है। प्राप्त कर ली तब भी उसकी खुशी क्षण्कि है क्योंकि अ वह अपना मकान भी बदलना चाहता है।

इसके विपरीत निवृत मन वह है जिसे यह भौतिक पदार्थ प्रसन्न नहीं करते। उसने अपनी आत्मा को इमना उठा लिया होता है कि प्रभु मिल नही उसे असली खजाना लगता है।

हृदय की प्रसन्नता कैसे प्राप्त करे

हृदय की प्रसन्नता कैसे प्राप्त करे

हृदय की प्रसन्नता भौतिक पदार्थो से प्राप्त नहीं की जा सकती। यह तो आपके अन्दर है जिसे बाहरी भौतिक पदार्थो से खरीदा नहीं जा सकता।जब हम इस सत्य को जान लेते हैं तो पहली चीज जो हम प्राप्त कर लेते है वह है मन की शातीं। कारण हम शांति की खोज में भटकना बन्द कर देते है। यह ज्ञान भी हमें अन्दर की खुशी देता है।

यदि हम अन्दर की खुशी प्राप्त करना चाहते हैं तो निम्न कुछ टोटके सहायक हो सकते है। पहला है सन्तोष करना सीखें। इसका अर्थ यह नहीं कि हम किसी भी चीज की इच्छा न करें या फिर धन कमाना बन्द कर दें। इसका अभिप्राय यह है कि जो हमने मेहनत करके व नेक ईरादों से पाया है उस में सन्तोष करना सीखें न कि अपने को या ईश्वर को कोसना प्रारम्भ कर दें कि हमे जो हम से अमीर हैं उन की तरह क्यों नहीं बनाया । जब हम अपने से नीचे वालों को देखें तो स्वभाविक तौर पर ईश्वर का धन्यबाद करने का मन करता है। यही है सन्तोष धन।

दूसरा अपने स्वार्थ से उपर उठना सींखें। कुछ पाने की ईच्छा के स्थान पर देने की ईच्छा करें। सौ हाथें से कमांए परन्तु हजारों हाथों से दान देने की आदत डालें। अपने परिवार या प्रिय जनों के बारें में ही न सोचते रहें परन्तु परिवार से बाहर दूसरों लोगों के बारे में भी सोचने की आदत डालें। अर्थात अपने परिवार के दायरें को बड़ा करें। वेद व शास्त्रों में बताऐ धर्म के नियमों का आचरण करें। उस में सब से पहली बात आती है जैसा व्यवहार आप दूसरों से अपने प्रति चाहते है, वैसा ही व्यवहार आप दूसरों के प्रति करें। सत्य न्यायपूर्ण मार्ग पर चलें व धर्मानुसार आचरण करें । दूसरों के प्रति दया, करूणा संवेदनधीलता, उदारचित बनें। सब से प्यार व सेवा भाव, विनम्रता, सहनशीलता व धैर्य जैसें गुण अपने में लांए।

चौथा, कर्म में लगे रहें न कि फल का अणिक सोचें। आप ने अक्सर देखा होग जब हम फल के बारे में चिन्तित रहते हैं तो आप काम भी ठीक तरह नहीं कर पाते और वह फल नहीं मिलता जो कि फल की चिन्ता किये बिना सारा ध्यान फल पर देने से मिलता। पांचवा, विश्वास करें पर अन्ध विश्वास नहीं। किसी द्वारा भी कही बात को तर्क से तोलें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस बात को नक कटों की टोली का उदाहरण देकर बहुत अच्छा समझाया है। किसी व्यक्ति का नाक कट गया। उसके मित्र ने पूछा कि नाक कैसे कटा तो उसने कहा———नाक कटा नहीं परन्तु ईश्वर के दर्शन करने के लिए उसने कटवाया है। तुम भी कटवा लो, ईश्वर के दर्शन तुमे भी हो जाएंगे। दूसरे व्यक्ति ने कुछ भी न सोचा और उसकी बातों में आकर नाक कटवा ली। दर्द से बुरा हाल था खून बह रहा था। उसने मित्र को कहा ——अरे भाई दर्द से बुरा हाल हो रहा है परन्तु ईश्वर तो दिखा नहीं। दसरे ने जबाव दिया——अरे भाई मेरे साथ भी ऐसे ही हुआ था। अब नाक तो बापिस आएगी नहीं हां हम अपनी टोली बना लेते हैं। तुम जाओ और अपने दोस्त को ऐसे ही कहो। इस तरह अेखते ही देखते सैंकड़ों ने अपनी नाक कटवा ली और पहले वाला टोली का गुरू बन गया। इसी लिए कहा है विश्वास करें पर अन्ध विश्वास नहीं। किसी द्वारा भी कही बात को तर्क से तोलें। ईश्वर है इस पर किसी तरह का संदेह करने की आवश्यकता नहीं कारण कोई महान शक्ति है जो इतने बड़े ब्रहमांड को चला रही है हमस ब प्राणियों को प्राण देकर पालती है और हमारे कर्मो के अनुसार हमें मृत्यु के बाद नया रूप देती है। परन्तु कोई कहे कि फलां बाबा ईश्वर है वह तर्क ही फसला कर सकता है। परन्तु हम में अधिक बिना तर्क के ही ऐसे राह चलते बहुतों को ईश्वर मान लेते है। और दुख पाल लेते हैं। निराकार, अन्नत, अनादि, अजन्मा सर्वशक्तिमान ईश्वर को मानना तो सुख व आनन्द देने वाला है परन्तु राह चलते बाबों को ईश्वर मान लेना दुख देने वाला ही होता है। छठा, प्रति दिन दो बार नही तो एक बार इस सृष्टि को बनाने वाले ईश्वर के ध्यान में लगाऐ और सारे ब्राहमाड व प्राणी जगत की सुख शातिं की कामना व प्रार्थना करें। जब दूसरों के कल्याण के लिए प्रार्थना करेंगे तो अपना भला खुद ही हो जाएगा। यदि हम प्रसन्नता चाहते है। सर्वे भवन्तु सुखिना हमारी प्रार्थना होनी चाहिए

मैं माता अमृितानन्दमई क लेख पढ़ता रहता हूं क्योंकि उसके उपदेश वेदा अनुसार होते है। अच्छा लगा इस लिए उसका अनुवाद आपके लिए प्रस्तुत कर रहा हूं

सम्पादक

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

MRS NIRMAL KANTA CHUGH DISTRIBUTED FOOD TO NGO CHILDREN IN MEMORY OF HER HUSBAND LATE SHRI LAJPAT RAI CHUGH

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 70 वर्ष

गैस ऐसीडिटी

शिमला का मशहूर कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

J L KHURANA

MUKESH CHANDER KHULLAR

ABHA POPLI

O P NANDWANI

CHITKARA MADAN LAL

O P NANDWANI

BABLOO SHARMA

ANUPAMA NANGIA

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr [illegible] ...g Havan with the children

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh

[illegible]381 and 0172-2662870

वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 124	Year 15	Volume 08	MAY 2024 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

IMPORTANCE OF SELF-INQUIRY
VICHAR in our lives

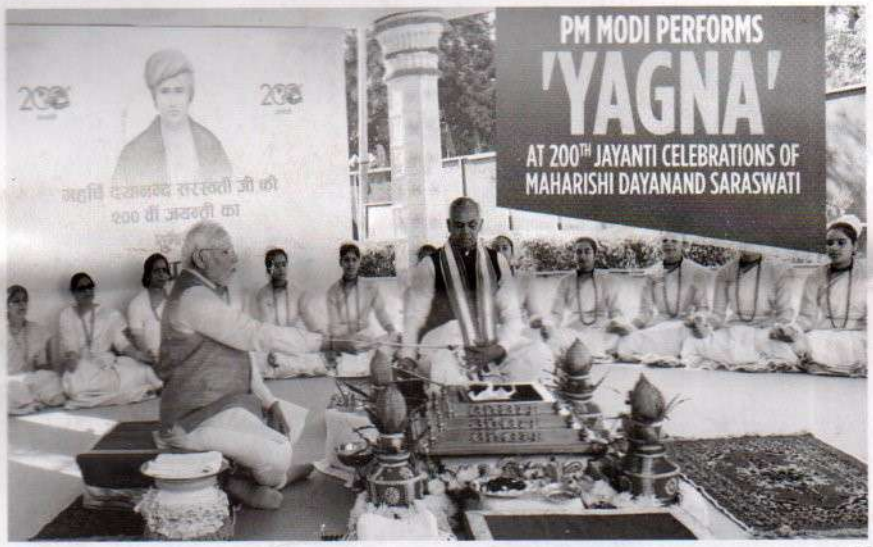

In the Vivekachudamani, Adi Shankara says only humans are blessed with the power of vivek, discrimination; the power to choose right from wrong, real from unreal. As a result of a sense of incompleteness, we identify with the mind and, thereby, lose this power. Discrimination is not obtained through the mind. The intellect is not a good guide either, because it always analyses 'what do I gain?' and not 'what is right for me?' Discrimination means going deep within, contemplating, and rising beyond the mind, body, and intellect.

Further, Adi Shankara says that the best course to get the right vision is to do Vichar, Self-enquiry. As we introspect and inquire, we realise that we are not the mind that merely generates thoughts and desires. As we proceed with self-analysis, all thoughts merge in the Source, Consciousness. Even if we perform innumerable acts by the dictates of our minds, or intellect, they will not be

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा
15 - हनुमान रोड
नई दिल्ली
110001

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2022-2024